

# भक्ति खण्ड

## देवभक्ति

(१)

एक तुम्हीं आधार हो जग में, अय मेरे भगवान ।  
कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥  
सँभल न पाया गोते खाया, तुम बिन हो हैरान ।  
कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥टेक ॥  
आया समय बड़ा सुखकारी, आतम-बोध कला विस्तारी ।  
मैं चेतन, तन वस्तु न्यारी, स्वयं चराचर झलकी सारी ॥  
निज अन्तर में ज्योति ज्ञान की अक्षयनिधि महान ॥  
कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥१॥  
दुनिया में इक शरण जिनंदा, पाप-पुण्य का बुरा ये फंदा ।  
मैं शिवभूष रूप सुखकंदा, ज्ञाता-दृष्टा तुम-सा बंदा ॥  
मुझ कारज के कारण तुम हो, और नहीं मतिमान ॥  
कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥२॥  
सहज स्वभाव भाव दशाऊँ, पर परिणति से चित्त हटाऊँ ।  
पुनि-पुनि जग में जन्म न पाऊँ, सिद्ध समान स्वयं बन जाऊँ ॥  
चिदानन्द चैतन्य प्रभु का है 'सौभाग्य' प्रधान ॥  
कि तुम-सा और नहीं बलवान ॥३॥

(२)

तिहारे ध्यान की मूरत, अजब छवि को दिखाती है ।  
विषय की वासना तज कर, निजातम लौ लगाती है ॥टेक ॥  
तेरे दर्शन से हे स्वामी! लखा है रूप मैं मेरा ।  
तजूँ कब राग तन-धन का, ये सब मेरे विजाती हैं ॥१॥